॥ श्री रामचन्द्र-चालीसा ॥

Contact : *Acharya Maitreya Astro Academy*
"Ramashram" 3/18, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan, INDIA
Web: http://www.amastroacademy.com, E-mail : info@amastroacademy.com

॥ श्री ॥

नमः श्री रामचन्द्राय

भगवान

श्री रामचन्द्र-चालीसा

दोहा-

जनक नन्दनी पति बिमल, लक्ष्मण अग्रजवीर।
दशरथ नन्दन पद्मवसु, हरो जगत जन पीर॥१॥

कर्म शत्रु संहार कर, पायौ अविचल धाम।
सुयश त्रिजग छायो बिमल, शत् शत् तुम्हें प्रणाम॥२॥

चौपाई-

जय रघुनन्दन परम दयालु,
दीन बन्धु अति परम् कृपालु।
निर्भय अचल-अटल व्रत धारी,
प्रजा पाल हैं, विपन बिहारी ॥३॥
तुम जग बन्धु दया के सागर,
परम विवेकी जगत उजागर।
सत्य शील पावन गुणधारी,
अति पुनित सज्जन हितकारी ॥४॥

राजनीति पालक बुधवन्ता,
क्षमावान गुणवान महन्ता।
तब जग सुयश विमल विस्तारा,
परम प्रतापी नाम तिहारा ॥५॥
सौम्य मूर्ति मन मोहन हारी,
वाणी मधुर सेधासम प्यारी।
दशरथ नन्दन परम हितैषी,
अति पवित्र पावन निर्दोशी ॥६॥

दीना नाथ दीन हितकारी,
यश गावत सब प्रजा तिहारी।
पितु–आज्ञा घर विपन पधारे,
गये संघ सिय अनुज तुम्हारे ॥७॥
तजी परम शाकेता नगरी,
शोका कुलित प्रजा तब सबसे।
तात वचन को पूर्ण निभाया,
किंचित हृदय न मत्सर आया ॥८॥

अति स्नेह भरत प्रति राख्यो,
घर सन्तोष शान्ती रस चाख्यो।
अति पवित्र पावन मन चङ्गा,
बहै भरत प्रति पावन गङ्गा ॥९॥
तुम रघुवीर परम अनुरागी,
महा पवित्र परम बड़ भागी।
ब्रज किरण पर विपदा आई,
उस विपति में हुए सहाई ॥१०॥

सिंहोदर को मार भगाया,
अभिमानी का मान मिटाया।
करी धर्म रक्षा रघुवीरा,
हरी भक्त की प्रभु तुम पीरा ॥११॥
तुम दयाल जग नायक स्वामी,
परम विवेकी शिव पथ गामी।
तुम अति विमल कुशल अधिनायक,
शील शिरोमणी परम सहायक ॥१२॥

रघुकुल तिलक जगत हितकारी,
मद–मद भंजन भ्रम भय हारी।
तुम पवित्र वृत पालन हारे,
अति पवित्र सब चरित्र तुम्हारे ॥१३॥
किहि किन्दापुर का इक वासी,
उसके गले लगी जब फांसी
उसने आकर शरण लीनी,
करके दया सहारा दीना ॥१४॥

बाल खिल्ल को मुक्त किया है,
उसको जीवन दान दिया है।
किया कपिल का तुम निस्तारा,
अति विरज का गर्व संहारा ॥१५॥
युगल मुनी उपसर्ग निवारा,
फेर विभीषण दिया सहारा।
गर्व युक्त रावण मद धारी,
अति निकृष्ट पिसुन अविचारी ॥१६॥

शील शिरोमणी सीता नारी,
हरण किया कर अत्याचारी।
अति अनीत उसने ठानी है,
बात न उसने इक मानी है॥१७॥
अति घमण्ड उद्धत मद छाया,
कुछ विचार नांहि मन में लाया।
हो मद–मत्त हीन मतवाला,
महा कार्य अनुचित कर डाला॥१८॥

हो निशंक रण भूमि आया,
फिर बहुत आप उसे समझाया।
फिर भी युद्ध ठान अज्ञानी,
हो उनमत्त प्रबल अभिमानी ॥१६॥
समराङ्गण में शौर दिखाओ,
विजय पाय सिय को ले जावो।
वच कठोर कोप दश कन्धा,
सब विवेक तज बन कर अंधा ॥२०॥

फिर भी तुम सत वचन सुनाए
किन्तु न मन वच रावण आए।
आखिर युद्ध स्थल में हारा,
मृत्यु पाय गति प्रथम पधारा॥२१॥
लंका राज विभीषण दीना,
सीता सहित गमन पुन कीना।
पुरी अयोध्या पावन कीनी,
सकल प्रजा आनन्द रस भीनी॥२२॥

अति चिर काल राज सुख पायो,
फिर निज मन वैराग्य समायो।
आत्मीय निज सम रस दर्शी,
जगी ज्योति अन्त स्तल स्पर्शी ॥२३॥
निजानन्द लवलीन भये हैं,
चरणों सुर मुनिइन्द्र गये हैं।
सब विभाव परिणत के त्यागी,
शुद्ध बुद्ध आतम अनुरागी ॥२४॥

निज स्वभाव में सुथिर भये हैं,
अचल अडोल अकम्प ठये हैं।
परिं परिणत से नाता तोड़ा,
मुक्त रमा से नाता जोड़ा॥२५॥
बोध समाधी समाधी लगाई,
अति विशुद्ध शुद्ध ज्योति जगाई।
आत्मीय–उद्यान निवासी,
प्रकटी शान्ति दशा अविनाशी॥२६॥

शुद्ध बुद्ध पर बृह्म समाना,
शत्रु मित्र सब रूप समाना।
प्रशम सदा समता रस पाकर,
परम विशुद्ध शुद्ध रत्नाकर ॥२७॥
अक्षय ज्योति अचल अविनाशी,
नमूं राम अष्टम भू वासी।
अति पवित्र मुनि मन अभी राम,
हे मुनिश वर ईश प्रणाम् ॥२८॥

गुण समूह भरपूर पूर रस,
ध्यावत योगी सतत भक्त वश।
सब उत्कृष्ठ सु गुण रत्नाकर,
शुद्ध बुद्ध तुम परम दिवाकर ॥२९॥
रहित उपाधि परम बढज्ञ भागी,
चिन्मय परम् विशुद्ध विरागी।
ध्यावत कलि–मल क्षण में खोवे,
जय रघुनन्दन तुम जय होवे ॥३०॥

कोटि सूर्य सम तेज प्रकाशी,
विश्वबन्ध उत्तम भू वासी।
मुनि गण शत–शत करत प्रणाम,
जयती जयती जय जय श्री राम ॥३१॥
है अनन्द सुख दर्शन ज्ञानी,
पर ब्रह्म पर पूरण ध्यानी।
पुरुषोत्तम पावक पर मेश,
नावत शत् शत् पद्म अशेष ॥३२॥

हे अविनिश्वर हे परमेश्वर,
चिदा नन्द आनन्द महेश्वर।
सत् चित घन अविकार अरूपी,
जय रघुनन्दन आत्म स्वरूपी॥३३॥
जगदानन्द जगत हितंकर,
विश्वपनी विश्वेश्वर शंकर।
जगदाधार जगत उपकारी,
शत–शत वन्दन शतत् हमारी॥३४॥

कर्म काष्ट को बह्नि समाना,
भव्य पद्म रवि विमल प्रधाना।
हैं विशुद्ध हे परम महन्त।
परमोत्कृष्ठ परम शुभ सन्त॥३५॥
तुम ध्याता तुम ध्येय विशुद्ध,
परमेष्ठी पावन तुम सिद्ध।
जो विशुद्ध मन ध्यान धरन्त,
ते पावें भव सागर अन्त॥३६॥

तुम भव सागर के पतवार,
तुम ही भव दधी तारन हार।
तुम्हारा नाम जगत आधार,
नमूं नमूं मैं शत शत वार ॥३७॥
विघ्न हरण तुम मंगल रूप,
तुम्हीं चिदानन्द तुम चिद्रुप।
लीना शरण श्री रघु राम,
यही प्रार्थना पार लगाय ॥३८॥

बार–बार बन्दु तुम चर्ण,
शीघ्र मिटा दो जामन मरण।
मोती सुत विनवै कर जोर,
हे श्री राम लखो मम ओर ॥३९॥

दोहा

चालीसा श्री राम का, पूरण भया पवित्र,
जो वाचे मन लायके, सुख पावे सर्वत्र।
रिद्ध–सिद्ध नव निधित्व है, निश दिन आठों याम,
भगवान श्री मानराम को 'छोटे' करत प्रणाम् ॥४०॥

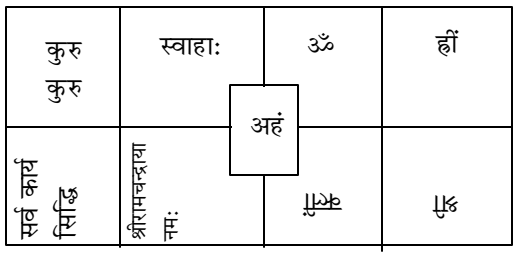

ॐह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री रामचन्द्रायनम: सर्व कार्य सिद्धि कुरु 2 स्वाहा॥

यह मंत्र अनादि है और परमपूज्य स्वर्गीय आचार्यवर 108 श्री शिवसागर जी महाराज के शिष्य पूज्य 108 श्री धर्मसागर जी मुनीरज सघस्थ आचार्यरत्न 108 श्री वृषभसागर जी महाराज के शुभ आशीर्वाद से प्राप्त हुआ है। इस मंत्र के जाप्य से सांसारिक कार्य, व्यापार आदि 2 में वृद्धि होती है। आपदाओं, आदि-व्याधि रोग नष्ट होकर पूर्ण वैभव मिलता है।